कोकंणी बाल–साहित्य

डॉ. रवीन्द्रनाथ मिश्र

भारतीय प्रायद्वीप के पश्चिमी तट पर स्थित गोवा राष्ट्रीय एवम् अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक पर्यटक स्थल के रूप में प्रसिद्ध है। प्राचीन काल में गोमांचल, गोकपाट्टन, गोपकपुरी आदि नामों से प्रसिद्ध इस स्थली के संदर्भ में एक पौराणिक कथा प्रसिद्ध है कि यह स्थल भगवान् परशुराम द्वारा अपने बाणों के संधान से समुद्र के पानी को हटाकर निर्मित हुआ। ऐतिहासिक दृष्टि से पहली शताब्दी के आसपास यहां सातवाहनों का राज्य था। बाद में राष्ट्रकूटों, चालुक्यों और सिलाहार राजवंशियों के इस क्षेत्र को 14वीं शताब्दी के अन्त में खिलजी वंश के शासकों ने अपने अधिकार में रख लिया। 15वीं शताब्दी के अन्त में वासकोडिगामा द्वारा भारत के लिए समुद्री मार्ग खोज में आए पुर्तगाली यहां पहुंचे और तब से सन् 1961 में स्वतन्त्र होने तक यहां पुर्तगालियों का कब्ज़ा रहा। तीन ओर से समुद्र से घिरा यह क्षेत्र महाराष्ट्र और कर्नाटक की सीमा से जुड़ा हुआ है। उत्तर में तेरेखोल नदी इसे महाराष्ट्र से अलग करती है। 19 दिसम्बर, 1961 में पुर्तगालियों के कब्ज़े से मुक्त कराने के पश्चात् यह भारत संघ का केन्द्र शासित प्रदेश बनाया गया। इसके साथ दमन और दीव को भी मिलाया गया। मन्टोवी और जवेरी यहां की प्रसिद्ध नदियां हैं। 12 अगस्त, 1987 को केन्द्रीय सरकार द्वारा इसे पूर्ण राज्य का दर्जा दिया गया और दमन और दीव को अलग केन्द्र शासित प्रदेश बनाया गया। गोवा समुद्र की पट्टी पर बसे होने के कारण कोंकण प्रदेश भी कहलाता है और यहां की राजभाषा कोंकणी है जो देवनागरी और रोमन दोनों लिपियों में लिखी जाती है।

कोंकणी, मराठी और हिन्दी के नजदीक की भाषा है। इनके अतिरिक्त यह कहीं–कहीं कन्नड और मलयालम लिपि में भी लिखी जाती है। इस भाषा में लोक साहित्य की समृद्ध परम्परा के संकेत तो मिलते हैं पर पाँच सदियों तक पुर्तगालियों के अधिकार में रहने के कारण इसके अतीत की काफी धरोहर नष्ट हो चुकी है। कोंकणी के रचनाकारों ने मराठी भक्तिमूलक रचनाओं को आधार बनाकर रचनाकार्य किया। रामायण व महाभारत की कथाएं तो रोमन लिपि में होने के कारण कुछ सुरक्षित भी रहीं। 16वीं शताब्दी में कृष्णदास ने मराठी मूल से जा अनुवाद किया वह इस दृष्टि से उल्लेखनीय है।

कोंकणी के 18वीं शताब्दी के कवि 'फादर जोकिम द मिरान्डा' एक प्रसिद्ध कवि हैं जिन्होंने 'रिग्जोज़ेसु भोलांतम' लिखा था। एक अन्य पुर्तगीज दोना ब्रेरतों ने 'पापियंसी क्सेरथिती' (पापियों के रक्षक) लिखकर इस भाषा की प्रतिष्ठा बढ़ाई। इस दौर के महत्त्वपूर्ण रचनाकार है शोणाय गोयम्बाव, बी. बोरकर, आर.वी. पंडित, एम. सर देसाई आदि। 10वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में कोंकणी ने आधुनिकता में सांस लेना प्रारम्भ किया। शोणाय गोयम्बाव की प्रेरणा से कोंकणी में साहित्य रचना को नई दिशा मिली।

गोवा में लगभग पांच यौ वर्षों तक पुर्तगाली शासन होने के कारण कोंकणी भाषा और साहित्य का विकास ठीक ढंग से नहीं हुआ। कोंकणी भाषा और साहित्य को अन्य भारतीय भाषाओं के समकक्ष लाने एवं उनके साथ कदमताल मिलाने की प्रक्रिया 1961 के बाद शुरू हुई। बाल–साहित्य लेखन के क्षेत्र में कोंकणी कविता के जनक स्वर्गीय मनोहरराय सरदेसाय ने नींव के पत्थर के रूप में कार्य किया। आपकी 'बेब्याचें काजार', 'भांगराची कुराड', 'माणकुली', 'मनोहर गीतां', 'गिडगीतां', 'जादूचो कोंबो' विवेकानन्द आदि महत्त्वपूर्ण बालरचनाएं आयीं। श्री पुण्डलीक नारायण नायक (सम्प्रति अध्यक्ष, गोवा कोंकणी अकादमी) मूलतः कोंकणी उपन्यासकार एवं नाटककार के रूप में जाने जाते हैं। आप बाल–साहित्य के क्षेत्र में भी उतने ही लोकप्रिय हैं। 'रान सुंदरी' (बालगीत नाट्य), 'आळशांक वाग खातलो', 'शिवांचो बळी' (बालनाट्य), 'गौरी और कल्परुख', 'बेकार भोंवडेकार' (बाल उपन्यास), और 'गोंयचो पावस'

(बालनिबंध–संग्रह) उनकी प्रमुख बाल रचनाएं हैं।

प्रेम और प्रकृति के कोंकणी कवि रमेश भगवंत वेलुस्कार ने 'पर्वनवा' बालकथा के माध्यम से कोंकणी कहानी विधा में दस्तक दी। बाल जीवन के विविध चित्रों को उन्होंने 15 कहानियों के माध्यम से गहरी अनुभूति के साथ व्यक्त किया है। आपका 'घुरु घुरु वारो' और 'चू चू' नामक दो बाल गीत और 'कुंडेकुस्कुर' नाम से तेरह दृश्यों का एक काव्यनाटक भी प्रकाशित हुआ। कल्याणी भरत नायक की 'देवकीली चवथ' में शीर्षक के अतिरिक्त अमराची खोशी, काटमुयेचें गर्वहरण, सुकण्यांच्या रंगांची काणी और दोंगुल्लेची भोंवडी नामक कुल चार कहानियां संकलित हैं। लोक कथाकार जयंती नायक को सानुल्यांचीं कवयनुलां (बालगीत), 'वागमामाचीं फजिती' और 'च्यड शाण्याक फातराचें' (बालनाटक), नवरंगी फूल (बालकहानी) और गोंयचीं लोककला नामक बाल–साहित्य लिखे। वर्ष 2002 में बाल–साहित्य पर लगभग 17 पुस्तकें प्रकाशित हुईं जिनमें से कतिपय रचनाओं में बालकों के अन्दर कंप्यूटर और मोबाइल के प्रति उनके ज्ञान और मोह का परिचय दिया गया है।

इनके अतिरिक्त कोंकणी बाल–साहित्य रचनाकारों में भरत नायक का विशिष्ट स्थान है। 'व्हडलो जातलों हांव' (मैं बड़ा बनूंगा) इनका आठवां बालगीत काव्यसंग्रह है। इसमें बालजीवन से संबंधित कुल 50 गीत संकलित हैं। इसी प्रकार झिलू लक्षमण गांवकार के 'माणकुल्यांची गितां' नामक बालगीत संग्रह में कुल 28 गीत हैं जिनमें गोवा के बालजीवन की झांकी को प्रस्तुत किया गया है। 'लसूण कांद्या झगडें' नागेश नायक के बालगीत संग्रह में कुल छोटी–छोटी 16 कविताएं हैं, जिनमें बालजीवन की मनोरम झांकी प्रस्तुत की गई है। भिकाजी घाणेकार के 'देशगीतां भक्तिगीतां' गी माया खरंगटे की 'नीलम' और 'शिटुक हाकू' नामक दो रचनाएं भी इस क्षेत्र में आईं।

वर्ष 2007 में 'काणी आज्याली' (पितामह की कहानी) देविदास कदम, 'वर्स फुकट वचूंक ना' (वर्ष निरर्थक नहीं गया) गजानन जोग, 'हरीश, पिरीश आनी देंवचार (हरीश, पिरीश और देंवचार) माया अनिल खरंगटे नाम से चार बाल उपन्यासों का प्रकाशन एक साथ हुआ। विमल प्रभुदेसाय की लघु बाल पुस्तिका 'तिंगूल' मात्र 23 पृष्ठों की है। जिसमें दो सचित्र बाल कहानियां और एक बालगीत संग्रहीत हैं।

कोंकणी बाल–साहित्य लेखन के क्षेत्र में उपन्यासकार दामोदर मावजो, दिलीप बोरकार, नरेन्द्र कामत, नयना आडास्कार, माणिकराव गावणेकार, अभयकुमार वेलिंगकार, प्रशांति तळपणकार, कमलाकर म्हाळशी, सतीश दळवी, रामनाथ गौवडे, मीना काकोडकर, गुरुनाथ केळेकार आदि का नाम भी विशेषरूप से उल्लेखनीय है।

22– आजाद को–आपरिटिब हाऊसिंग सोसाइटी
कुरका, गोवा–403108.
हिन्दी–विभाग, गोवा विश्वविद्यालय,